कौन जीतेगा? भारत बनाम पोलियो

लीज़ा ए. स्वेनास्की डि हरेरा

फोटो साभार: विश्व स्वास्थ्य संगठन

केवल तीन दशक पुरानी ही तो बात है, जब हर साल 3,50,000 भारतीय बच्चे पोलियो के शिकार हो जाते थे। देशभर में माता-पिता को एक दिन पता लगता था कि उनके बच्चों की टांगें अचानक लुंज-पुंज हो गई हैं, उनसे चलना संभव नहीं रहा, बुखार बना रहने लगा है और इस कारण उनकी ज़िंदगी सदा के लिए बदल गई है। लाखों परिवार आज भी उन बच्चों और वयस्कों की देखभाल कर रहे हैं जो चलने में असमर्थ हैं।

स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं और स्वयंसेवकों की बदौलत आज केवल गिने-चुने परिवारों में ही बच्चे पोलियो के शिकार होते हैं। विश्व भर में 10 वर्ष तक पोलियो उन्मूलन का जबर्दस्त अभियान चलाने, स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा घर-घर दरवाजे पर दस्तक देने, पोलियो के टीके की करोड़ों खुराकें पिलाने और अरबों डॉलर खर्च करने के बाद भी आज चार देशों में पोलियो सिर उठा रहा है। इनमें से भारत में केवल दो राज्य इससे प्रभावित हैं। लेकिन, यह भी सच है कि पोलियो उन्मूलन के प्रयास अगर जरा भी ढीले पड़ गए तो भारत और यहां तक कि विश्व भर में इस रोग के 1970 के दशक के वे

पक्षी फ़्लू

भारत सरकार 4 से 6 दिसंबर तक नई दिल्ली में पक्षी एवं विश्वव्यापी इन्फ़्लुएंज़ा पर बड़े अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की मेज़बानी करने जा रही है। इस सम्मेलन में इस विश्वव्यापी खतरे के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा जिनमें पशु स्वास्थ्य, मानव स्वास्थ्य और महामारी फैलने की स्थिति में पड़ने वाले आर्थिक और सामाजिक प्रभाव शामिल हैं।

पक्षी और विश्वव्यापी इन्फ़्लुएंज़ा से संबंद्ध अमेरिकी विशेष प्रतिनिधि ने अक्टूबर में कहा, ''अमेरिकी सरकार का एक प्रतिनिधिमंडल नई दिल्ली में होने वाले मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की नई शपथ के साथ जाएगा।''

अंतरराष्ट्रीय समुदाय इस घातक विषाणु का फैलाव रोकने और मानव महामारी फैलने की स्थिति में उससे निपटने के लिए प्रयासरत है। अब तक यह विषाणु 60 देशों में फैल चुका है। भारत भी पहले ही पक्षी फ़्लू से रूबरू हो चुका है। फ़रवरी 2006 में भारत ने पुष्टि की कि उसके यहां मुर्गीपालन केंद्रों में घातक एच5एन1 विषाणु पाया गया। लेकिन भारत में अब तक पक्षी फ़्लू से किसी मानव के पीड़ित होने का मामला सामने नहीं आया है। –ऋ. व.

दुर्दिन वापस लौट सकते हैं।

असल में भारत, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान और नाइजीरिया चारों ऐसे देश हैं जिनमें पोलियो फैलाने वाले स्थानीय पोलियो-विषाणु पर कभी कोई रोक नहीं लग पाई। ऐसे भी देश हैं जहां कई साल तक पोलियो का प्रकोप नहीं हुआ, लेकिन पोलियो संक्रमण वाले देशों से पोलियो विषाणु वहां पहुंच गए। इससे वहां इनका प्रकोप हो गया और फिर से पोलियो फैल गया। कई देश जो पोलियो से मुक्त हो चुके थे, हाल के वर्षों में वहां नाइजीरिया तथा भारत से पोलियो विषाणु पहुंच गए और फिर से पोलियो फैल गया।

भारत में पोलियो आज भी सबसे बड़ी चुनौती बना हुआ है। भारत में विश्व स्वास्थ्य संगठन के पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के परियोजना प्रबंधक डॉ. हामिद जाफ़री का कहना है, ''विश्व में पोलियो उन्मूलन की चुनौती के लिहाज से सबसे मुश्किल क्षेत्र पश्चिमी उत्तर प्रदेश है।''

गरीबी, अधिक आबादी, बीमारी, स्वच्छता की कमी के साथ ही गलत सूचना तथा अफवाह के कारण पोलियो तमाम परिवारों को अपना शिकार बना रहा है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश और बिहार देश के दो ऐसे राज्य हैं जहां पोलियो का अधिक प्रकोप होता है। वहां वर्ष 2006 में पोलियो के मामले बढ़ गए क्योंकि कई समुदायों में यह अफवाह फैल गई कि पोलियो का टीका नुकसानदेह है और लोगों ने टीका लेने से मना कर दिया। इन समुदायों के लोग इसकी कीमत चुका रहे हैं क्योंकि वर्ष 2006 में 676 बच्चे पोलियो के शिकार हो गए जबकि 2005 में पोलियो के केवल 66 मामले सामने आए थे। इस वर्ष अब तक इन दोनों क्षेत्रों में 281 बच्चे पोलियो के शिकार हो चुके हैं लेकिन खुशी की बात यह है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पोलियो का गढ़ माने जाने वाले जिलों में पोलियो विषाणु टाइप-एक का कोई प्रकोप नहीं हुआ। पोलियो की यह सबसे घातक प्रजाति है। पोलियो के शिकार परिवारों के दुख ने भारतीय स्वास्थ्यकर्मियों के संकल्प को और मज़बूत बनाया है। जिन गांवों में इस रोग का सबसे अधिक खतरा है, वहां पोलियो कार्यकर्त्ता परिवारों से मिलने हर माह एक बार ज़रूर जाते हैं। सामुदायिक नेता, पत्रकार और मुल्ला-मौलवी परिवारों से पोलियो का टीका लेने का अनुरोध कर रहे हैं। लेकिन पोलियो टीके का विरोध क्यों हो रहा है?

जाफ़री कहते हैं, ''कई समुदायों के लोग बहुत गरीब हैं, इसलिए उन्होंने विरोध स्वरूप टीका नहीं लिया। इसे उनकी निराशा मान सकते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि उन्हें साफ पानी मिले, सफाई का प्रबंध हो और सड़कें बनवाई जाएं। टीका न लेने से धर्म का कोई संबंध नहीं है, हालांकि इनमें बहुत-से गरीब मुसलमान परिवार भी हैं। सच तो यह है कि मुसलमान तथा अन्य अल्पसंख्यक वर्गों के अधिकांश परिवार प्रत्येक पोलियो अभियान के दौरान पोलियो का टीका लेते हैं।''

पश्चिमी उत्तर प्रदेश और बिहार के उन हज़ारों परिवारों तक टीकाकरण पहुंचाने में बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ता है जो साल में कई महीने काम की तलाश में दूसरे राज्यों में चले जाते हैं। सरकार अब इन परिवारों पर ध्यान केंद्रित कर रही है ताकि उनके घर पर न रहने पर भी उनके बच्चे पोलियो की खुराक से वंचित न रहें।

भारत और पूरी दुनिया से पोलियो को उखाड़ फेंकने के लिए भारत तथा अमेरिका की सरकारें, यूनिसेफ़ और रोटरी इंटरनेशनल मिल-जुल कर काम कर रहे हैं। इन्हें सफलता मिल गई तो यह दूसरी बीमारी होगी जिसे जड़ से उखाड़ फेंका जाएगा। 1970 के दशक में चेचक का उन्मूलन किया गया था। इस प्रयास में अमेरिकी सरकार ने सर्वाधिक आर्थिक सहायता दी है। लेकिन, अमेरिकी लोगों को इतनी चिंता किसलिए?

जाफरी कहते हैं, ''इसलिए कि अमेरिका में पोलियो ने जो दुख-तकलीफ दी, अमेरिकी लोगों के मन में उसकी दर्दनाक यादें शेष हैं। और साथ ही, अमेरिकी लोग मानवतावादी हैं। वे जानते हैं कि यह एक ऐसा रोग है जिसका उन्मूलन किया जा सकता है। इसके उन्मूलन के लिए सस्ता और सुलभ तरीका भी उपलब्ध है जिसका आसानी से प्रयोग किया जा सकता है।''

नीचे: 1970 के दशक में पोलियो की महामारी के कारण हज़ारों भारतीय बच्चे विकलांग हो गए।

नीचे दाएं: उत्तर प्रदेश में एक ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ता बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाते हुए।

फोटो साभार: विश्व स्वास्थ्य संगठन